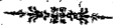


## जैन बालकों के लिये शुभानसर



सेठिया जैन विद्यालयमें इंग्लिश हिन्दी वणिका (देशी हिसाब-महाजनी) धार्मिक और संस्कृत का विद्याभ्यास होता है। संस्कृत विद्याधीओंको न्याय व्याकरण साहित्य और प्राकृत आदि का पूर्ण ज्ञान आचार्य या तीर्थ तक पढाया जाता है, निराधार जैन बालकों को विद्याभ्यास के लिये सब खर्चका बढोबस्त हमारा तर्फसे कर दिया जाता है। जो पढनह चाहे वह खबर मिले या पत्र व्यवहार करे।

निवेदन—

भैरोदान जेटमल सेठिया

बीकानेर, (रजपूताना) J. B Ry.

श्रीजनेन्द्राय नमः

## अथ श्रीतेतीस बोलका थोकड़ा

सूत्र श्रीउत्तरा ययन समवायाग तथा दशाश्रुतस्कर वगेरहमे  
तेतीस बोलका थोकड़ा चले सो कहते है.

( विस्तार अन्य जगहका है )

पहले बोले-एक प्रकारका असयम-सर्व आस्रवसे निवृत्त  
नहीं होना

दूसरे बोले-दो प्रकारका पन्थन-राग वन्थन और द्वेष पन्थन.

तीसरे बोले-१ तीन प्रकारका दण्ड-१ मनदण्ड, २ वचनदण्ड,  
३ कायदण्ड

२ तीन प्रकारकी गुप्ति-१ मनगुप्ति, २ वचनगुप्ति,  
३ कायगुप्ति

३ तीन प्रकारका शल्य-१ माया शल्य, २ नि-  
याण (निदान) शल्य, ३ मिथ्या दर्शन शल्य.

४ तीन प्रकारका गर्व-१ क्रुद्धिगर्व, २ रसगर्व,  
३ सातागर्व

५ तीन प्रकारकी विराधना-१ ज्ञानकी विराधना,  
२ दर्शनकी विराधना, ३ चारित्रकी विराधना.

चोथे बोले-चार कपाय-१ क्रोध कपाय, २ मान कपाय,  
३ माया कपाय, ४ लोभ कपाय.

चार सज्ञा-१ आहार सज्ञा, २ भय सज्ञा, ३ मै  
थुन सज्ञा, ४ परिग्रह सज्ञा.

चार कथा-१ राज्यकथा, २ देशकथा, ३ स्त्री-  
कथा, ४ भातकथा ( इन चारों  
सम्बन्धी कथा )

चार यान-१ आर्तध्यान, २ रौद्रध्यान, ३ धर्म  
ध्यान, ४ शृङ्गध्यान तथा १ पदस्थ  
२ पिण्डस्थ, ३ रूपस्थ और ४ रू-  
पातीत ध्यान

पाचमें बोले-पांच क्रिया-१ जायिका, २ अत्रिफ्रगिका, ३  
प्रद्वेषिका, ४ पारितापनिका, ५ प्राणातिपातिका

पाच सामगुण-शब्द, रस, गन्ध, रस, स्पर्श

पाच महाव्रत-१ सर्वथा प्राणातिपातसे निवृत्ति, २ स  
र्वथा मृषावादसे निवृत्ति, ३ सर्वथा अदत्तादानसे  
निवृत्ति, ४ सर्वथा मैथुनसे निवृत्ति, ५ सर्वथा  
परिग्रहसे निवृत्ति ( सर्वथा त्रिफरण त्रिजोगसे )

पांच समिति-१ इर्यासमिति, २ भापासमिति, ३ एण-  
णासमिति, ४ आदान भडमत्त निक्षेपना समिति,  
५ उच्चार मत्तवण खेल जल इलेप्प परिस्थापनिका  
समिति ( इन कामोंमें शृद्ध उपयोग )।

पांच प्रपाद-१ मद, २ विषय, ३ कपाय, ४ निद्रा,  
५ प्रिकया।

छठे बोले-छ काय-१ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेजस्काय,  
४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय, ६ त्रसकाय।

छ लेश्या-१ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या, ३  
कापोत लेश्या, ४ तेजो लेश्या, ५ पद्म लेश्या,  
६ शुक्ल लेश्या।

सातमें बोले-सात भय-१ इहलोक भय-मनुष्यसे मनुष्यको भय

२ परलोक भय-मनुष्यको देवता या तिर्यचसे भय

३ आदान भय-धन ढोलतके नष्ट होनेका भय।

४ अस्मात् भय-घईसे अनारो आपत्ति आ जावे-  
अचानक दुःख आ जावे ऐसा भय

५ आजीविका भय-भावप्यमें खानेपानेको मीलेगा  
या नही सुखसे गुजर होनेमें बाधा न आ जावे  
ऐसा भय

६ अपयश भय-किसी तरह रज्जतमें हरमत पहुचे या  
यश वीरति जैसी है वैसी नैसे रनी रहगी ऐसा भय।

७ मरण भय-मौतका डर-फर मरुगा यह निश्चित  
नहीं होनेसे हर समय मरण की शंका रखना

आठम बोले-आठ मद्-१ जातिमद्, २, कुलमद्, ३ वलमद्,  
४ रूपमद्, ५ तपमद्, ६ लाभमद्, ७ सूत्रमद्,  
पेश्वर्यमद् ( अहकार )

नवम बोले-ब्रह्मचर्यकी नव गुप्ति-रक्षा-बाँडे (१) ब्रह्मचारी  
पुरुष ऐसे स्थानमें न रहे जहाँ स्त्री, पशु नपुंसक  
रहते हैं वा बारबार आते जाने हो और रहे तो चूँ  
और विद्वोहा हृष्यान्त-—जिन जगह विद्वो रहती हैं  
वस जगह चूँ, चाहे जिनको सावधानीसे रहे, तो भी  
उनके मारे जाने का सम्भव है, तैसे ही ब्रह्मचारी पुरुष  
स्त्री वगैरह सहित स्थान भोगवे तो उनके ब्रह्मचर्यके  
खण्डित होनेका सम्भव है (२) ब्रह्मचारी पुरुष स्त्री  
सम्बन्धी काम राग बढ़ानेवाली यथा यार्ता कर नहीं  
और करे तो निम्बु और रसना (जीभ) का दृष्टान्त  
जैसे निम्बुरसका जानकार जब निम्बुरा नाम लेता  
है कि उसके मुहमें पानी छुटने लगता है-आ जाता है  
तैसे ही ब्रह्मचारी पुरुष स्त्री सम्बन्धी बातें करे तो  
शीघ्ररत्नके भंग होनेकी सम्भावना रहती है (३)  
स्त्री जिस,

साथ भी बैठना नहीं और बैठे तो कोरा और कणकका दृष्टान्त, जैसे कोरेका फल कणक (भिजा हुआ आटा) के पास रखा जावे तो वह कणक ज्यादा २ गीला होता जाता है और उसका रसकस घटता जाता है तैसे ही ब्रह्मचारी पुरुषका स्त्रीके आसनपर बैठनेसे ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है (४) ब्रह्मचारी पुरुष स्त्रीके अगोपाग रूप लाजण्य निरखे नहीं-बारबार नजर-भरके देखे नहीं देखे तो कच्ची आख और सूर्यका दृष्टान्त, जैसा ज मता बालक सूर्यको देखे तो अन्धा होजाता है या उसका दृष्टि विषय घट जाता है. तैसे ही ब्रह्मचारी पुरुष स्त्रीके अगउपाग निरखे तो ब्रह्मचर्यका नाश होनेका सभव है, (५) ब्रह्मचारी पुरुष, स्त्रीके रुदन, गीत, हास्य, आक्रुद, कुजित इत्यादि शब्द सुनाई पडे वैसी भीति या टट्टीके आठमें वास करे नहीं ( पासके मकानमेंसे भी इनका ध्वनि कानोंमें आताहो वहां न रहे ) और रहे तो मेघ और मोरका दृष्टान्त, मेघके-बादलके गर्जनेपर मोर ( मयूर ) अवश्य गोलता है-फोकाट करना है तैसेही स्त्रीके हास्यादिके शब्द सुननेपर काम राग घटता और ब्रह्मचर्य खण्डित होनेका सभव रहता है. (६) ब्रह्म-चारो पुरुष पूर्वकालके स्त्रीके साथ भोगेहुवे भोगोंको याद न करे और करे तो जिनरक्ख और रयणादेवीका

दृष्टान्त, जैसे जिनरत्न रयणादेवीके साथके काम-भोग याद करके लज्जा गया और प्राण खोये तैसे ब्रह्मचारी पुरुष पूर्वके कामभोगका चारवार स्मरण करे तो जीलरत्न गुमा देता है (७) ब्रह्मचारी पुरुष हमेशा सरस-स्त्रादिष्ट आहार करे नहीं और करे तो सन्निपातके रोगीका दुग्ध मिश्रीका दृष्टान्त अर्थात् जिसको सन्निपात-शीत हो गया है उसे दुग्ध मिश्री पीलाई जावे तो वह मर जाता है तैसेही हमेशा सरस सुष्ट आहार करनेवाला ब्रह्मचारी अपना ब्रह्मचर्य खो बैठता है (८) ब्रह्मचारी पुरुष लुब्धा निरस आहारभी दागने करे नहीं, अजिफ भरेतो सेरकी हाथीमें सवासेरका दृष्टान्त-अर्थान् जिस गारेकी (कच्ची मिट्टीकी) हांडीमें सेर धान्य पफ्ता है उसमें सवासेर राधाजावेतो हांडीका नुरुसान होता है-फट जाती है, तैसे ब्रह्मचारी अधिभोजन भरेतो ब्रह्मचर्य गुमा देता है-नष्ट कर देता है (९) ब्रह्मचारी पुरुषको स्नान शृंगार करना नहीं-शरीरका मण्डन विभूषा करना नहीं और करेतो राकके हाथमें रत्नका दृष्टान्त जिस प्रकार राक पुष्पमें रत्न रखवनेकी योग्यता न होनेसे उसे बाजारमें हाथोंमें उड़ावता चलता है देखनेवालेका मन चल जाता है और रत्न खोसलीया जाता है वह मूर्ख उसे पेटोंमें बन्द नहीं रखता है

तैसेही ब्रह्मचारी पुरुष न्हावे घोवे, शणगार करेतो  
 उनर्मभो शील रत्नको रखवनेकी अयोग्यता है स्त्री  
 वगेरेका मन शील रत्नको लुटानेका होजाताहै और  
 ब्रह्मचर्य नष्ट होजाता है

दशमें बोले—दश प्रकारका यति धर्म—(१) सन्ति—अपराधी पर  
 वैरभाव नहीं रखना, क्षमा धारणा (२) मुक्ति—लोभ  
 रहित बनना. (३) अज्जवे—सरलता—निष्कपटता.  
 (४) मद्दवे—मार्त्य, नम्रता, अहंकारका त्याग (५)  
 लाप्रवे—भण्डोपकरणकी उपाधि छोड़ी होना. (६)  
 सधे—सचाईसे, प्रामाणिकतासे चलना व आचरण  
 करना. (७) समये—शरीर, मन और इन्द्रियोंको  
 कायुमें रखना, बश करके नियममें रग्नना (८) तवे  
 —आत्मशक्ति बढ़े, इच्छाशक्ति बढ़े, मनोबल दृढ होवे  
 उस त्रिभिसे उपवास वगेरा तप करना (९) चियाए  
 -ममताका त्याग करना. (१०) बम्भचेरनासे—  
 शुद्ध आचार पाळे, मैथुनसे सपूर्ण निवृत्ति करे—  
 पराङ्मुग्य रहे.

दश प्रकारकी समाचारी—(१) आवस्सिया—उपाश्रय  
 (स्थानक) बाहर जानेका होवे तब बडे मुनिसे अज  
 करे कि दृझे बाहर जाना जरूरी है (२) निसीद्विया—  
 उपाश्रयमें पीडा लौटते वरत गुर्गादिसे कहे मैं अपने



कामसे निवृत्त होकर आ गयाहू (३) आपुच्छणा-  
 सुदके काम होवेतो गुरुसे पुच्छे. (४) पट्टिपुच्छणा-  
 अन्य मुनियोंके काम होवेता गुरुसे बारवार पुच्छे.  
 (५) उन्दणा-अपनी लाइ हुई वस्तु बढोंको धामे  
 देनेको कहे (६) इच्छाकार-गुरुसे अर्ज करे कि  
 अगर आपकी इच्छा होवे तो मुझे सूत्रार्थ-ज्ञानदान  
 दीजिये (७) मिच्छाकार-पापकर्मको गुरुके सामने  
 मिव्या दुष्कृत कहे (८) तद्वकार-गुरुके वचनको  
 प्रमाण करे-स्वीकार करे अथवा आप जैसा कहते हो  
 वैसाही है ऐसा कहे (९) अम्बुद्राण-गुरु तथा बडे  
 मुनियर आवे तब सात आठ कदम-पग सामा जावे  
 और पिछा लठे तब उतना ही पहुचाने जावे (१०)  
 उवसपया-गुरुजनोंसे सूत्रार्थ लक्ष्मी पानेके वास्ते  
 हमेशा सावधान रहे और गुरुके पासमें रहे.

इग्यारमे रोले-श्रावणकी इग्याग प्रतिमा-(१) दर्शन प्रतिमा-  
 एक मासकी शुद्ध अतिचार रहित समकित धर्म पाले.  
 (२) व्रत प्रतिमा-दोमासकी-नाना प्रकारके व्रतनियम  
 अतिचार रहित पाले (३) सामायिक प्रतिमा-तीन  
 मासकी अतिचार रहित हमेशां सामायिक करे. (४)  
 पोषधप्रतिमा-चार मासकी-अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा  
 वगैरेका पोषध, अतिचार रहित करे (५) कायोत्सर्ग

प्रतिमा-पांच मासकी-हमेशा रात्रिके अन्दर कायोत्सर्ग करे और पांच वातोंका पालन करे "१ स्नान न करे, २ रात्रि भोजन त्यागे, ३ घोतीकी लाग सुली रखे, ४ दिनको ब्रह्मचर्य पाले, ५ रात्रिको ब्रह्मचर्यका परिमाण करे" ६ ब्रह्मचर्य प्रतिमा-७ मामकी-निरतिचार पूर्ण ब्रह्मचर्य पाले (७) सांचित प्रतिमा-जघन्य (कमतीसे कमती) एक दिनकी और उत्कृष्ट (ज्यादे से ज्यादा) सात मासकी-सचित्त वस्तु नही भोगे (८) आरभ प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट आठ मासकी-आप सुद आरभ करे नहीं (९) प्रेष्य प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट नव मासकी-दूसरेसे भी आरभ करावे नहीं ( १० ) उद्दिष्टचय प्रतिमा-जघन्य एक दिनकी उत्कृष्ट दश मासकी-इनका वास्ते आरभ करके कोई वस्तु देवे तो लेवे नहीं सुगमुण्डन करावे-शिखा रखे कोई उनसे कुच्छ बात एक वरत पुच्छे या वारवार पुच्छे, तब जानते ह.वे तबतो हां कहे और नहीं जानते होंवे तो ना कहे (११) श्रवण भूत प्रतिमा-उत्कृष्ट इग्यारा मासकी सुगमुण्डन करे या लोच करे साधु जितना ही उपकरण पात्र रजोहरण रखे, स्वज्ञातिभी गौचरी करे और कहे कि मैं श्रावक हू साधु माफक उपदेश देवे, सर्व प्रतिमायें साढे पाच वर्ष लगे.

कामसे निवृत्त होकर आ गयाहू (३) आपुच्छणा-  
 सुदके काम होवेतो गुरुसे पुच्छे. (४) पडिपुच्छणा-  
 अन्य मुनियोंके काम होवेतो गुरुसे चारचार पुच्छे.  
 (५) छन्दणा-अपनी लाइ हुई वस्तु बढोंको धामे  
 देनेको कहे (६) इच्छाकार-गुरुसे अर्ज करे कि  
 अगर आपकी इच्छा होवे तो मुझे सूत्रार्थ-ज्ञानदान  
 दीजिये (७) मिच्छाकार-पापकर्मको गुरुके सामने  
 मिव्या दुष्कृत बहे (८) तदकार-गुरुके बचनको  
 प्रमाण करे-स्वीकार करे अथवा आप जैसा कहते हो  
 वैसाही है ऐसा बहे (९) अन्धुदृण-गुरु तथा बडे  
 मुनिवर आवे तत्र सात आठ कर्म-पग सामा जावे  
 और पिछा लठे तत्र उतना ही पहुचाने जावे (१०)  
 अवसपया-गुरुजनोंसे सूत्रार्थ लक्ष्मी पानेके वास्ते  
 हमेशा सावधान रहे और गुरुके पासमें रहे.

इग्यारमे बोले-श्रावस्त्री इग्याग प्रतिमा-(१) दर्शन प्रतिमा-  
 एक मासकी शुद्ध अतिचार रहित समकित धर्म पाछे.  
 (२) व्रत प्रतिमा-दोमासकी-नाना प्रकारके व्रतनियम  
 अतिचार रहित पाछे (३) सामायिक प्रतिमा-तीन  
 मासकी अतिचार रहित हमेशा सामायिक करे (४)  
 पोषधप्रतिमा-चार मासकी-अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा  
 वगैरेका पोषध, अतिचार रहित करे (५) कायोत्सर्ग

प्रतिमा-पाच मासकी-हमेशा रात्रिके अन्तर कायोत्सर्ग  
 करे और पांच रातोंका पालन करे "१ स्नान न करे, २  
 रात्रि भोजन त्यागे, ३ घोतीकी लंग खुली रखे, ४  
 दिनको ब्रह्मचर्य पाळे, ५ रात्रिको ब्रह्मचर्यका परिमाण  
 करे" ६ ब्रह्मचर्य प्रतिमा-छ मासको-निरतिचार पूर्ण  
 ब्रह्मचर्य पाळे (७) सचित्त प्रतिमा-जग्न्य (मपनीसे  
 कमनी) एक दिनकी और उत्कृष्ट ( ज्यादा से ज्यादा)  
 सात मासकी-सचित्त वस्तु नही भोगे (८) आरभ  
 प्रतिमा-जग्न्य एक दिनकी उत्कृष्ट आठ मासकी-आप  
 खुद आरभ करे नहीं (९) प्रेष्य प्रतिमा-जग्न्य एक  
 दिनकी उत्कृष्ट नव मासकी-दूसरेमे भी आरभ करावे  
 नहीं ( १० ) उद्दिष्टचय प्रतिमा-जग्न्य एक दिनकी  
 उत्कृष्ट दश मासकी-इनका रास्ते आरभ करके कोई  
 वस्तु देवे तो लेवे नहीं खुग्मुण्डन करावे-शिखा  
 रखे कोई उनसे कुच्छ रात एक वरत पुच्छे या  
 चारवार पुच्छे, तब जानते हवे तबतो हा रहे और  
 नहीं जानत हवे तो ना कहे (११) श्रवण भूत प्रतिमा-  
 उत्कृष्ट इग्यारा मासकी खुरमुण्डन करे या लोच करे  
 साधु जितना ही उपकरण पात्र रजोहरण रखे,  
 स्वज्ञातिकी मौचरी करे और कहे कि मैं श्रावक हू  
 साधु माफक उपदेश देवे. सर्व प्रतिमामें साढे पाच  
 वर्ष लगे

घारमें बोले-गिधुकी घारद प्रतिमा नीचे खिंची हुई तेरद कल्पमें  
हरएक प्रतिमाधारी पावे (१) पहेली प्रतिमा एक  
मामकी-निममें-

(१) शरीरपर ममना रखते नहीं गरीबी श्रुश्रुपा करे  
नहीं-देव मनुष्य निर्यच सम्बन्धी उपमर्ग सम  
परिणामसे सहन करे

(२) एक दाति आहार और एक दाति पाणी-मायुरु  
तथा तेषणिक छेवे (दाति=धार=एक साध, धार  
खण्डित हुये जिना जितना पाशमें पडे इतनेको दाति  
कहते है)

(३) प्रतिमाधारी साधु गौचरीके वास्ते दिनके तीन  
विभाग कर और तीन भागमेंसे चाहे जिस एक  
विभागमें गौचरी करे

(४) प्रतिमाधारी साधु छ प्रकारसे गौचरी करे (१)  
पेटीके आकारे (२) अर्ध पेटीके आकारे (३) घेलेके  
मूत्रके आकारे (४) पतंग उडे उम तरह (५) शखा-  
रतन (६) जायता करे तो आवता नहीं करे और  
आयता करे ता जायता नहीं करे

(५) गामके लोगोको मालुम पड जावे कि यह प्रतिमा  
धारी मुनि है ता बहा एक रातही रहे और ऐसा  
मालुम नहीं पडे तो दो रात्रि रहे उपरान्त जितनी  
रात रहे उतना प्रायश्चित्त भागी रने

- (६) प्रतिमागारी साधु चार कारणसे बोलने है १ याचना करनेको, २ मार्ग पुच्छनेको, ३ आज्ञा पानेको, ४ प्रश्नके उत्तर देनेको
- (७) प्रतिमागारी साधु तीन स्थानमें निवास करे—१ बागवतीचा, २ श्मशान-उत्ती, ३ वृक्षका तला इनमें याचना करे
- (८) प्रतिमागारी साधुको तीन प्रकारकी शय्या—१ पृथ्वी, २ जिला, ३ श्राष्ट्र
- (९) प्रतिमागारी साधु जिस स्थानमें है वहा स्त्री प्रमुख आवे तो भयके मारे राहर निकले नही कोई जरूरत हाथ पकड कर काढे तो ईर्यासमिति सहित राहर हो जाये तथा वहां जाग लगे तोभी भयमे राहर आवे नही कोई राहर काढे तो ईर्यासमिति पूर्वक राहर निकल जावे.
- (१०) प्रतिमागारी साधुके पगमें काटा लग जावे और आपमें काटा (धुठ ठण प्रमुख) पड जावे तो आप उसे अपने हाथसे काढे नही
- (१०) प्रतिमागारी साधु सूर्योत्पसे सूर्यके अस्त होने तक विहार करे रात्रमें एक पग भी चले नही.
- (११) प्रतिमागारी साधुको सचित्त पृथ्वीपर बैठना सोना कल्पे नही तथा सचित्त रज लगे हुवे पेरेसि (पगसे) गृहस्थके यहां गौचरी जाना कल्पे नही

(१२) प्रतिमाधारी साधु मासुक जल्से भी हाथ पाग मुह ममुख धोवे नही अशुचीका छेप दूर करनेको धोना कल्पता है

(१३) प्रतिमाधारी साधुके मार्गम हाथी घोडा अथवा जगन्नी जानवर सामने आये होवे नो भी मुनि भयसे रास्ता छोडे नही-जानवरकी दया खावर अलग हो जाते है तथा रास्ते चउते तडकेसे जायमें और छायासे तडकेम आये नही शीत उष्णताको सम परिणामसे सहन करे.

(१) दूसरी प्रतिमा एक मासकी जिसमें दो दाति अन्न और दो दाति पानीका लेना कल्पता है

(३) तीसरी प्रतिमा एक मासकी जिसमें तीन दाति अन्न और तीन दाति पानी लेना कल्पे इस तरह चौथी, पाचमी, छट्टी, सातमी प्रतिमा भी एकर मासकी उनमें चार दाति-पांच दाति-छ दाति-सात दाति आहार पानी लेना कल्पे.

(८) आठमी प्रतिमा सात दिनकी-चौविहार एका-न्तर तप कर-ग्रामके बाहर रहे तीन आसन करे-चित्ता मुवे, करपट (एक धाजुपर) मुवे, पलांठी (पालखी) लगाकर मुवे परिसहसे ढरे नही

(९) नवमी प्रतिमा सात दिनकी उपर ममाणे.

- इतना विशेष कि तीन आसनमेंका एक आसन करे—दण्ड आसन, लङ्कुट आसन, उत्फट आसन
- (१०) दशमी प्रतिमा सात दिनकी उपर प्रमाणे इतना विशेष कि तीनमेंसे एक आसन करे—गोदुह आसन, वीरामन, अम्बुबन आसन
- (११) इग्यारमी प्रतिमा एक दिनकी—चौविहार बेला करे, गाम बाहर पग सकोच कर—हाथ पसार कर कायोत्सर्ग करे

(१२) बारमी प्रतिमा एक दिनकी—चौविहार तेला करे, गाम बाहर शरीर त्यागके—नेत्र खुले रख कर—पग सकोच, हाथ पसार—अमूक वस्तुपर दृष्टि लगा कर ध्यान करे—देव मनुष्य तिर्यक सम्बन्धी उपसर्ग महे इस प्रतिमाके आराधनसे अवधि—मन पर्यय—केवलज्ञान इन तीनमेंका एक ज्ञान होता है और आसनसे चलजावे तो पागल बन जावे, दीर्घ काशका रोग पावे—केवली मरुपित धर्मसे भ्रष्ट बने.

इन कुल बारह प्रतिमाओंका काल आठ मासका है.

तेरहमें बोले—तेरह क्रिया स्थान (१) अर्थ दण्ड—सुदके लिये हिंसादि करे ( २ ) अनर्थ दण्ड—निरर्थक वा कुत्सित





(८) महाकाठ (९) असिपत्र (१०) घनुप (११) कुम्भ  
(१२) बालुक (१३) वैतरणी (१४) खरस्त्र (१५)  
महाघोष

सोलहमें गोले-सूत्रकृतागके प्रथम श्रुत स्कन्धके सोलह अथ  
यन-नाम (१) स्वसमय परसमय (२) वैदादिक (३)  
उपसर्ग प्रज्ञा (४) स्त्री प्रज्ञा (५) नरक विभक्ति (६)  
वीर स्तुति (७) कुशील परिभाषा (८) वीर्याभ्ययन  
(९) धर्मभ्यान (१०) समाधि (११) मोक्षमार्ग (१२)  
समसंस्करण (१३) अथातन्त्र्य (१४) ग्रथी (१५) यम-  
तिथि (१६) गाथा

सत्तरहमें गोले-सत्तरह प्रकारका समय (१) पृथ्वीकाय समय  
(२) अप्काय समय (३) तेजस्काय समय (४) वायु  
काय समय (५) रसस्पतिकाय समय (६) वेदन्द्रिय  
समय (७) तैडन्द्रिय समय (८) चर्जरन्द्रिय समय  
(९) पचेन्द्रिय समय (१०) अजीरकाय समय (११)  
प्रेक्षा समय (१२) उत्प्रेक्षा समय (१३) अपहृत्य (प-  
दाना) समय (१४) प्रमार्जना समय (१५) मनःसमय  
(१६) वचन समय (१७) शरीर समय.

अठारहमें गोले-अठारह प्रकारका ब्रह्मचर्य (१) मनकरके-वचन  
करके-काया करके औदारिक शरीर सन्नधी भोग  
सेवे नहीं, सेवावे नहीं और जो सेवन करते है उन्हें

अर्धके वास्ते हिंसादि करे (३) हिंसा दण्ड-उत्तने मुझे माराथा-मारता है वा मारगा उस भावसे उसे मारना, (४) अकस्मात् दण्ड-मारना कित्से या जौग रिचमें मर जावे दूसरा (५) दृष्टि विपर्यास दृष्टि-दुग्धमन जानकर मित्रको मारदाग्ना (६) मृपायाद् दण्ड-असत्य भाषण करना (७) अदत्तादान दण्ड चोरी करना (८) अभ्यस्थ दण्ड-मनमें दुष्ट कल्पना करना (९) मानदण्ड-गर्व करना (१०) मित्र दण्ड-मातापिता मित्र वर्गको अल्प अपराध परभी भारी दण्ड देना (११) माया दण्ड-कपट करना (१२) लोभ दण्ड-गोभ करना (१३) श्यापथिक् दण्ड-रास्ते चालता जीव हिंसा हीवे.

चौबदमें बोले-जीवके चौबदा भेद (१) सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त (२) सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त (३) ग्राह्य एकेन्द्रिय अपर्याप्त (४) ग्राह्य एकेन्द्रिय पर्याप्त (५) त्रैन्द्रिय अपर्याप्त (६) त्रैन्द्रिय पर्याप्त (७) त्रिन्द्रिय अपर्याप्त (८) त्रिन्द्रिय पर्याप्त (९) चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त (१०) चतुरिन्द्रिय पर्याप्त (११) असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त (१२) असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त (१३) संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त (१४) संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त

पन्द्रमें बोले-पन्द्रा परगणधर्मीदेव (१) आम्र (२) आम्ररस (३) शाम (४) सरल (५) रुद्र (६) वैरुद्र (७) काल

(८) महाकाल (९) असिपत्र (१०) वज्र (११) कुम्भ  
(१२) बालुक (१३) वैतरणी (१४) रारस्वर (१५)  
महाघोष

सोलहमें गोल्ले-सुत्रकृतागके प्रथम श्रुत स्कन्धके सोलह अध्य-  
यन-नाम (१) स्वमय परसमय (२) वैदादिक (३)  
उपसर्ग मन्त्रा (४) स्त्री मन्त्रा (५) नरक विभक्ति (६)  
वीर स्तुति (७) कुशीठ परिभाषा (८) वीर्याभ्ययन  
(९) धर्म यान (१०) समाधि (११) मोक्षमार्ग (१२)  
समसंस्करण (१३) अथातन्त्र (१४) ग्रथी (१५) यम-  
तियि (१६) गाथा.

सत्तरहमें गोल्ले-सत्तरह प्रकारका समय (१) पृथ्वीकाय समय  
(२) जम्भकाय समय (३) तेजस्काय समय (४) वायु  
काय समय (५) उनस्पतिकाय समय (६) नेत्रिन्द्रिय  
समय (७) तैडन्द्रिय समय (८) चर्जरिन्द्रिय समय  
(९) पचेन्द्रिय समय (१०) अजीवकाय समय (११)  
प्रेक्षा समय (१२) उत्प्रेक्षा समय (१३) अपहत्य (प-  
दाना) समय (१४) प्रमार्जना समय (१५) मनःसमय  
(१६) वचन समय (१७) शरीर समय.

अठारहमें गोल्ले-अठारह प्रकारका ब्रह्मचर्य (१) मनकरके-वचन  
करके-काया करके औदारिक शरीर समन्वी भोग  
सेवे नही, सेवावे नही और जो सेवन करते है उन्हे

अनुमोदे (पशसे) नही (३ × ३ = ९ हुवे) तैसेही नव  
भेद वैक्रिय शरीर सम्बन्धो त्रिकरण त्रिजोगके है

बत्तीसमें बोले-उत्तीस (१९) ज्ञाता मूत्रके अ ययन है (१)  
उत्तिष्ठ मेघकुमारका (-) धनासार्थवाह और विजय  
चोरका (३) मोरके अण्डोंका (४) काचरा (कूर्म)का  
(५) शैलक राजर्षिका (६) तुत्रटेका (७) धनासार्थ-  
वाह और चार बहूओंका (८) म्लीभगवतीका (९)  
जिनपाल और जिनराभनका (१०) चद्रकी कलाका  
(११) राजानलका (१२) जितशत्रु राजा और सुषुद्धि  
मधानका (१३) नन्मणिकारका (१४) तेतली पुत्र  
मधान और सुनारकी पुत्रो पोटिलाका (१५) नदी  
फलका (१६) अमरकाका (१७) समुद्र अश्वका (१८)  
सुसीमागरिकाका (१९) पुडरोक कुडरीरुना

पीसमें बोले-बीस, असमाधिके स्थानक (१) उतारलमे चाले  
(२) पुञ्जा बिना चाले (३) अयोग्य रीतिसे पुजे (४)  
पाट पाटला ज्यादा रखे (५) घडोंके गुरजनेके सामे  
बोले (६) वृद्ध-स्थविर-गुरुका उपघात करे (मृत  
प्राय. करे) (७) साता-रस-विभूषानिमित्त एकेद्रिय  
जीव हणे (८) पलपलमे क्रोध करे (९) हमेशा क्रोधमें  
जलता रहे ( १० ) दूसरेके अवगुण खोले-चुगली-  
निंदा करे (११) निश्चयकारी भाषा बोले (१२) नया

क्लेश खडा करे (१३) उपशमे (मीटे) हुवे तेशको पीडा  
 चेतावे (१४) अकाले स्वाध्याय करे (१५) सचित्त  
 पृथ्वीसे भरे हुवे हाथोंसे गोचरी करे (१६) एक महर  
 रात्रि बीतने परभी जोरभमे गोले (१७) गच्छमें भेद  
 पाडे (१८) तेश फैलाकर गच्छमें परम्पर हु ख उप-  
 जावे ( १९ ) त्नि उगनेसे जस्त होने तर हरदम  
 आहार लिया ही करे (२०) अनेपणिक अपासुक आ-  
 हार लेवे

एकवीसमें बोले—अवीस प्रकारके सबल ( भारी ) दोष (१)  
 हस्तकर्म करे (२) मैथुन सेवे (३) रात्रिभोजन करे  
 (४) आशुकी भोगवे (५) राजपिण्ड भोगवे (६)  
 पाच मोठ सेवे—खरीद कियाहुवा, उबार लियाहुवा  
 जखन खोसा (लिया) हुवा, खास मालिककी रजा  
 विना लियाहुवा, स्थानपर सामा लायाहुवा, आहार  
 बगैरह देवे और साधु उसे लेवे (साधुको दनेवास्तेही  
 खरीदा होवे, स्वाभाविक तो सब खरीदाजाना है )  
 (७) बारबार त्याग करे और भांगे (८) एक मासमें  
 तीन बरत कच्चा जलका स्पर्श करे—नदी उतरे (९)  
 छ.० महीनामें गण—सप्रदाय पलडे—पठटना नहीं चाहिये  
 (१०) एक मासमें तीन बरत माया—कपट करे (११)  
 जिसके मकानमें रहेहों उसीके यहासे आहार करे—  
 शय्यातर पिण्ड भोगवे (१२) दरादा पूर्वक हिंसा करे

(१३) इरादा पूर्वक झूठ बोले (१४) इरादा पूर्वक चोरी करे (१५) इरादा पूर्वक सचित्त पृथ्वीपर शयन आसन करे (१६) इरादा पूर्वक सचित्त मिश्र पृथ्वी पर शय्या गौरह करे (१७) सचित्त शिला तथा जिसमें छोटे-जन्तु रहे वैसे काष्ठ मसुख वस्तुपर अपना शयन आसन लगावे (१८) इरादा पूर्वक दश जातकी सचित्त वस्तु खारे-मूल, कद, रुकथ, त्वचा, गागा, मयाला, पत्र, पुष्प, फल, वीज (१९) एक सालमें दश रगत सचित्त जलका स्पर्श करे-नदी उतरे (२०) एक सालमें दश माया-कपट सेवे (२१) सचित्त जलसे भिगे हुवे हाथसे आहारादि गृहस्थ देवे उसे इरादा पूर्वक लेकर भोगवे

चाबीमें बोले-त्रावीस प्रकारके परीपह (१) क्षुधा (२) तृषा (३) शीत (४) उष्ण (५) डारस, मञ्जर (६) अचेल (बद्ध रहित) (७) अरति (८) स्त्री (९) चलनेका (१०) स्थिर आसन लगाकर एक जगह बैठे रहनेका (११) शय्या-उपाश्रयका (१२) आक्रोश (१३) वध-माणनाश (१४) याचना (१५) अलाभ-मागी हुई वस्तुका नहीं मिलना (१६) रोग (१७) तृणस्पर्श (१८) जलमैल-पसीना तथा मेल (१९) सत्कार पुरस्कार (२०) मज्ञा (२१) अज्ञान (२२) अन्वर्शन-श्रद्धा रहित बननेका

तेवीसमें बोले-सूत्रकृतांगके २३ अ ययन-प्रथम श्रुतस्कंधके १६ अ ययन सोलहमें बोलत, दूसरे श्रुतस्कंधके सात अ ययन (१) पुण्डरीक कमल (२) क्रियास्थान (३) आहार प्रतिज्ञा (४) प्रत्यारयान प्रज्ञा (५) अनगार-सुत (६) आर्द्रकुमार (७) उदक (पेढाल पुत्र).

चौबीसमें बोले-चौबीस प्रकारके देवता, (१०) भवनपति, (८) व्यन्तर, (५) ज्योतिषी, (१) वैमानिक, कुल २४ हुवे

पच्चीसमें बोले-पच महात्रतकी पच्चीस भावना पहले महात्रतकी पांच (१) इर्यासमितिभाषना (२) मनसमितिभाषना (३) वचनसमितिभाषना (४) ऐपणासमितिभाषना (५) अदानभण्ड माग निक्षेपनासमितिभाषना दूसरे महात्रतकी पाचभाषना (१) मिना विचार क्रिये गोलना नहीं (२) क्रोधसे बोलना नहीं (३) लोभसे गोलना नहीं (४) भयसे गोलना नहीं (५) हास्यसे गोलना नहीं. तीसरे महात्रतकी पाच भाषना (१) निर्दोष स्थानक मागके लेना (२) वृण वगैरह मागके लेना (३) स्थानक वगैरह सुधारना नहीं (४) स्वधर्मीका उदत्त लेना नहीं और आहारका सविभाग करना (५) तपस्वी ग्लान आदिको वैयावच्च करना. चौथे महात्रतकी पांच भाषना (१) स्त्री, पशु, नपुंसक सहित स्थानकमें ठहरना नहीं (२) स्त्रीके साथ वा स्त्री सम्यन्धी कथा



वार्ता करना नहीं (३) स्त्रीके अगउपाग रागदृष्टिसे देखना नहीं (४) पहलेके कामभोग याद करना नहीं (५) सरस तथा बलवान आहार करना नहीं पाचमें महात्रतकी पांच भावना—(१) भले शब्दपर राग, भुटे शब्दपर द्वेष करना नहीं, तैसेही (२) रूपपर (३) गंध पर (४) रसपर और (५) स्पर्शपर रागद्वेष नहीं करना.

छवीसमें बोले—उवीस अव्ययन—दश दशाश्रुतस्कथके, छ वृहत्कल्पके और दश व्यवहारसूत्रके ( इनमें साधुना विधिवाद है )

सत्तावीसमें बोले—सतावीस साधुके गुण—पाच महात्रत, पाच इन्द्रियका निग्रह करना चार कपायका विजय करना (५ + ५ + ४ = १४) (१५) भावसत्य (१६) करणसत्य (१७) जोग सत्य (१८) क्षमा (१९) वैराग्य (२०) मन समाधारणता (२१) उचन समाधारणता (२२) काय समाधारणता (२३) ज्ञान (२४) दर्शन (२५) चारित्र (२६) वेदना सहिष्णुता (२७) मरण सहिष्णुता

अठावीसमें बोले—अठावीस आचार कल्प (१) एक मासका प्रायश्चित (२) दुसरा एक मास और पांच दिनका (३) तीसरा एक मास और दश दिनका इस तरह पाच० दिन बढ़ाते हुवे पाच महीने तक कहना इस

प्रकार पचीस उपजातिक है (२६) अनुघातिक आ-  
रोपण (२७) कृत्स्न-सपूर्ण (२८) अकृत्स्न-अपूर्ण.

गुनतीसमें बोले-२९ पाप सूत्र. (१) भूमिम्पशास्त्र (२) उ-  
त्पातशास्त्र (३) स्वप्नशास्त्र (४) अतरोक्ष-आकाशशास्त्र  
(५) अगस्फुरणशास्त्र (६) स्वरशास्त्र (७) व्यजन-  
तल-मसादि चिह्नशास्त्र (८) लक्षणशास्त्र. ये आठ सूत्र  
रूप, आठ वृत्तिरूप, आठ वार्तिकरूप, कुल चोवीस  
हुवे (२५) विग्रहा अनुयोग (२६) मित्रा अनुयोग  
(२७) मत्र अनुयोग (२८) योग अनुयोग (२९)  
अन्य तीर्थिक प्रवृत्त अनुयोग

तीसमें बोले-महामोहनीय कर्मग्रन्थनेके तीस स्थानक (१) ब्रह्म  
जीवको जन्में डुगाकर मारेतो (२) ब्रह्मजीवको श्वास  
रूपके मारेतो (३) ब्रह्मजीवोंको बाडेमें उद करके  
मारेतो (४) तलवारादिसे ( शस्त्रसे ) मस्तरादि  
अगोपाग काटेतो (५) मस्तरूपर गीला चमडा बान्ध  
कर मारेतो (६) ठग होकर गलेमें फासा डालकर  
मारे-विश्वासघात करे (७) कपट करके अपना अना-  
चार-दुष्ट आचार ठिपावे-सूत्रार्थ ठिपावेतो (८)  
आप कुर्रुम करे और दूसरे निरपराधी मनुष्यपर  
आरोप लगावे तथा दूसरेकी यशकीर्ति प्रदानेको  
जडा कलक लगावेतो (९) लोकमें अच्छा दिखने

वास्ते-बलेश यद्दानेके वास्ते सभाके बीचमें मिश्र  
 भाषा बोलेतो (१०) राजाका भडारी-राजाकी लक्ष्मी  
 हरण करना चाहे-राजा राणीसे कुशील सेवन करना  
 चाहे-राजाके प्रेमीजनोंके मनको पण्डना चाहे तथा  
 राजाको राज्याधिकारसे बाहर करना चाहेतो (११)  
 विषयलम्पटी बनकर-पगण हुवा होकर भी कुबारा  
 होनेका कहेतो (१२) ब्रह्मचारी नहीं होते हुवेभी  
 ब्रह्मचारी कहलावेतो (१३) नौकर मालीरुमी लक्ष्मी  
 लूटे तथा लुटावेतो (१४) जिस पुम्पने अपनेको  
 धनवान् इज्जतवान् अधिकारी बनाया-उस उपमा-  
 रीको इर्ष्या परिणामसे घुराड़ करे-दुल्हा बनानेकी  
 चेष्टा करे-उपकारका उद्वला अपकारसे देवेतो (१५)  
 भरणपोषण करनेवाले राजादिको तथा ज्ञानदाता  
 गुरुको हणेतो (१६) १ राजा २ नगरशेठ तथा ३  
 मुखीया-बहुल यशवाले इन तीन जनोंको हणेतो  
 (१७) बहुतसे मनुष्योंका आधारभूत जो मनुष्य है  
 उसे हणेतो (१८) समय लेनेको तैयार हुवा है  
 उसका दिल हटावेतो तथा समय लिये हुएको  
 धर्मसे भ्रष्ट करेतो (१९) तीर्थकरके अवर्णवाद  
 बोलेतो (२०) तीर्थकर प्ररूपित न्याय मार्गका द्वेषी  
 बनकर-(उसमार्गकी) निन्दा करे तथा उस मार्गसे  
 लोगोंका मन दूर हटावे (२१) आचार्य उपाध्याय-

सूत्र पिनयके शिखानेवाले पुरपोकी निन्दा करे-उप  
 हास करेतो (२२) आचार्य उपाध्यायके मनको आ  
 राधे नहीं तथा अहंकारभायसे भक्ति नहीं करेतो (२३)  
 अल्प शास्त्रज्ञानका जाणकार होते हुवेभी सुदकी तारीफ  
 करे तथा स्वायायका वाद करेतो (२४) तपस्वी  
 नहीं होते हुवेभी तपस्वी कहलावेतो (२५) शक्ति  
 होते हुवेभी गुर्पाटि तथा स्थिति-ग्लान मुनिका विन  
 वैयायच करे नही और कहेकि इहोने मेरी वैयायच  
 नही की थी ऐसा अनुकम्पा रहित होवेतो (२६) चा  
 तीर्थमें भेद पड़े एसी कथा-बलेशकारी बातों करेत  
 (२७) अपनी तारीफके वास्ते तथा दूसरेके सा  
 पितता करनेका-अधर्मयोगवशीरणादि मयोग करेत  
 (२८) मनुष्य तथा देव सम्बन्धी भोग अवसपनेसे-  
 अत्यन्त आशक्त परिणामसे सेवेतो (२९) महाकृद्धि  
 वान्-महायशकैधणी देवता है उनके उलगीर्यम  
 अयगुण-अपराध बोलेतो (३०) ज्ञानीजीव लोगो  
 पूजाका गरजी-चारजातिके देवताको नही देखता  
 तोभी कहेकि में उन्हें देखता हूँ

इकतीसमें बोले-इकतीस गुण सिद्ध महाराजके-आठ कर्म  
 इकतीस प्रकृति नष्ट होनेसे ये गुण प्रगट होते  
 वास्ते उन इकतीस प्रकृतिको बतावे है. ज्ञानावरणी

कर्मकी पांच-(१) मतिज्ञानावरणीय (२) श्रुतज्ञाना  
 वरणीय (३) अवधिज्ञानावरणीय (४) मन'पर्यय-  
 ज्ञानावरणीय (५) केवलज्ञानावरणीय. दर्शनावर-  
 णीय कर्मकी नव-(१) निद्रा (२) प्रचला (३) निद्रा  
 निद्रा (४) प्रचलाप्रचला (५) धीगद्धि-स्त्यानगृद्धि  
 (६) चक्षुदर्शनावरणीय (७) अचक्षुदर्शनावरणीय  
 (८) अग्रधिदर्शनावरणीय (९) केवलदर्शनावरणीय.  
 वेदनीय कर्मकी दो प्रकृति-(१) सातावेदनीय (२)  
 असातावेदनीय मोहनीय कर्मकी दो प्रकृति-(१)  
 दर्शनमोहनीय (२) चारित्रमोहनीय आयु कर्मकी  
 चार प्रकृति-(१) नरक आयुष् (२) तिर्यग् आयुष्  
 (३) मनुष्य आयुष् (४) देव आयुष् नामकर्मकी दो  
 प्रकृति-(१) शुभ नाम (२) अशुभ नाम. गोत्रकर्मकी  
 दो प्रकृति (१) उच्च गोत्र (२) नीच गोत्र अन्तराय  
 कर्मकी पांच प्रकृति-(१) दानान्तराय (२) लाभान्त-  
 न्तराय (३) भोगान्तराय (४) उपभोगान्तराय (५)  
 वीर्यान्तराय

बत्तीसमें बोले-उत्तीस प्रकारका योग सग्रह-(१) लगेहुवे  
 पापोंका प्रायश्चित्त लेनेका सग्रह करना (२) दुसरेके  
 छियेहुवे प्रायश्चित्तको और किसीको नही कहनेका  
 सग्रह करना (३) विपत्ति आनेपर भी धर्ममें द्रढ़ रह-

नेका सग्रह करना (४) निरपेक्ष तप करनेका सग्रह  
 करना (५) सूत्रार्थ ग्रहण करनेका सग्रह करना (६)  
 शुश्रुषा ढालनेका सग्रह करना (७) अज्ञात कुलकी  
 गोचरी करनेका सग्रह करना (८) निर्लोभी होनेका  
 सग्रह करना (९) बावीस परीपह सहनेका सग्रह कर-  
 ना (१०) साफ दिग्-सरल रहनेका सग्रह करना  
 सत्य, समय रखनेका सग्रह करना (११) सम्यक्त्व  
 निर्मल रखनेका सग्रह करना (१२) समाधि सहित  
 रहनेका सग्रह करना (१३) पच आचार पालनेका  
 सग्रह करना (१४) विनय करनेका सग्रह करना  
 (१५) धैर्य रखनेका सग्रह करना (१६) वैराग्य  
 रखनेका सग्रह करना (१७) शरीरको स्थिर रख-  
 नेका सग्रह करना (१८) विधिपूर्वक अन्ते अनुष्ठान  
 का सग्रह करना (१९) आसन्न रोकनेका सग्रह करना  
 (२०) आत्माके दोष ढालनेको सग्रह करना (२१)  
 सब विषयोंसे विमुख रहनेका सग्रह करना (२२)  
 प्रत्याख्यान (पञ्चखाण) करनेका सग्रह करना  
 (२३) द्रव्यसे उपाधि, भावसे गर्वादिके त्यागका  
 सग्रह करना (२४) अग्रमादी बननेका सग्रह करना  
 (२५) काले २ क्रिया करनेका सग्रह करना (२६)  
 धर्म ध्यानका सग्रह करना (२७) सबर योगका सग्रह-

करना (२९) मरण, आतक रोग उपजने पर मनको  
 मुभित नही बनानेका सग्रह करना (३०) म्जनादि  
 को त्यागनेका सग्रह करना (३१) लिये हुवे प्राय-  
 श्रितको कग्नेका सग्रह करना (३२) आग्धिरु पण्डित  
 मरण होवे वैसे आगधना कग्नेका सग्रह करना  
 यानि अप्रशस्त जागोंका निरुधन करना

तेतीसमें बोले-तेतीस प्रकारकी आसावना (१) गुरु या  
 बड़ोंके सामने शिष्य अविनयसे चालेतो (२) गुरु  
 आदिके बराबर चालेतो (३) गुरुआदिके पीछेभी अवि-  
 नयसे चालेतो (४-५-६) गुरुआदिके आगे पीछे या  
 बराबर अविनयसे उभा रहेतो (७-८-९) गुरुआदिके  
 आगे पीछे या बराबर अविनयसे चलेतो (१०) शिष्य  
 बटे लोगोंके साथ बाहर-जगल फिरागत जावे और  
 वहासे पहले शोचार्थसे निवृत्त होकर आगे चला  
 आवेतो (११) शिष्य गुरुके साथ बाहर गया हो  
 और पीछा लोटनेपर श्यापथिक पहले प्रतिघ्रमेतो  
 (१२) कोई पुरुष उपाश्रयमें आवे तब पहले बटे गुरु  
 आदिमें बोलना उचित है तथापि पहले शिष्य बोले  
 और गुरु पीछे चलेतो (१३) रात्रिके समय जब गुरु  
 कहे-अहो आर्य! कान निन्दमें है औरकौन जागते है?  
 तब आप जागता होते हुवे भी उत्तर देवे नही तो

(१४) जो आहारादि लाया है उस वाचत पहले अन्य मुनिसे कहे और वादमें गुरुसे कहेतो (१५) आहारादि पहले अन्य मुनिको बताये और वादमें गुरुको बतावेतो (१६) आहारादि पहले अन्य मुनिको आमने-धामे और पीछे गुरुको धामेतो (१७) आहारादि गुरुजनोको पूछे बिनाही अन्य मुनियोंको जिनपर कि उसका प्रेम है-थोडा२ ठेकेवेतो (१८) बडाँके साथ भोजन करते समय सरस-मनोज्ञ आहार शूट२ करेतो (१९) गुर्वाणिके पुकारने पर भी मौन रहेतो (२०) गुर्वाणिके बुलानेपर अपने आसनपर बैठा२ कहे-मैं यहा हू परन्तु आसन छोड उनके पास जाये नहीं इस डरसे कि रुई कुच्छ काम बतायेगे (२१) गुरुके बुलाने पर जोरसे तथा अविनयसे कहे कि क्या कहते हो ? (२२) गुर्वाणिके कहे हे शिष्य ! यह काम (वैयाकरणदि) तेरे लाभकारी है इसे कर, तब पीछा कहे अगर लाभकारी है तो आपही क्यों नहीं करलेते हो (२३) शिष्य, बडाँके साथ कठोर-रुईश भाषा वापरे (२४) शिष्य, गुरुजनके साथ वैसेही शब्द वापरे ( काममें लाये ) जैसे गुरुजन शिष्यके साथ काम लाते है (२५) गुरुजन व्याख्यान-धर्मोपदेश देते ही तब सभाके निचमें कहे कि आप जो कहते हो वैसा



पयान कहा है ? (२६) गुरुजनके व्याख्यानमें कहे  
 कि आपतो भलते हो यह कहना सत्य नहीं है (२७)  
 गुरुजनके व्याख्यानसे राजी न रहते नाराजी दि-  
 खावे ( इस विचारसे कि इससे ज्यादा अच्छातो मैं  
 जानता हू ) (२८) गुरुजन व्याख्यान देतेहो तब  
 सभामें भट डालनेको-विसर्जन करने जैसा शब्द  
 बोले-महाराज गौचरीका या अमुक कामका समय  
 हो गया है (२९) गुरुजन व्याख्यान देते है तब  
 श्रोतान्नके मनको व्याख्यानसे नाराज करनेकी चेष्टा  
 करे (३०) गुरुजनका व्याख्यान पुरा बन्द नहीं हुवा  
 हो-समाप्त पुरा हुवा न हो उससे पहलेही आप व्या-  
 ख्यान गुरु कर देवे तो (३१) गुर्वाणिकी शय्या-  
 आसन बगैरहको पगसे ठोकरावे तो (३२) चडोंकी  
 शय्यापर आप उभा रहे, बैठे, सुवे तो (३३) गुरुके  
 शयन-आसनसे अपना शयन उचा करे वा बराबर  
 भी करे और तमपर सुवे बैठे तो आमातना लागे

इति शुभम्



॥ श्रीवीतरागायनम ॥

## सक्षिप्त धर्मपरीक्षा.

सृष्टिप्य विनयपूर्वकं गुरुमहाराजसे प्रश्न करता है  
और गुरुमहाराज योग्य उत्तर देते हैं

प्रश्न—हे भगवन् ! ससारमें जितने जीव हैं सबको धर्म शब्द  
अति प्रिय क्यों लगता है ?  
उत्तर—हे शिष्य ! इसमें आश्चर्य करनेका कोई कारण नहीं है तुझे  
आश्चर्य क्यों होता है ?

प्रश्न—हे महाभाग ! मुझे आश्चर्य इस बातपर होता है कि सब  
जीव धर्मके यथार्थ स्वरूपको जानते नहीं, तोभी उन्हें  
अवश्य धर्म शब्द उहुनही प्रिय प्रतीत होता है

उत्तर—हे चिरजीव ! र्म जीवका निज स्वरूप है—धर्मही जीवका  
स्वभवाङ्ग है इस वास्ते र्म शब्द सबका प्रिय बनता है.  
दृष्टान्त समझिये कि जब नाग ( सर्प ) का मन्त्र पौला  
जाता है तब वह उसको सुनकर उद्भुत राजी होता है  
और इतना प्रसन्न चित्त होजाना है कि उसका छोटा  
( वमन क्रिया ) हुआ त्रिप-जहर पीछा चूस लेता है  
और इसका कारण यह है कि उस नाग मन्त्रमें उसके  
कुलका वर्णन किया जाता है और वह नाग निजके  
कुल-वशका वर्णन सुनकर आनन्दमें लीन बन जाता है,

इसी प्रकार धर्मभी-जीव मात्रका निज स्वभाव होनेसे जीव जरर धर्म शब्द सुनता है उसको बड़ा पिय लगता है

शिष्य-हे स्वामिन् ससारमें प्राय सब लोग ऐसा कहते है कि धर्म देहसे-शरीरसे निपजता है ( पैदा होता है-बनसक्ता है ) और आपने धर्मका जीवका स्वरूप निरूपण किया है-बताया है इस लिये इस विषयमें विशेष प्रकाश डालनेको अधिक प्रवेचन करनेको कृपा करे

गुरु-हे आधुप्यन् ! चेतना जीवका लक्षण है उस वही उसका धर्म है चेतनामें अनंत गुण समाये है-रहते है उनमें तीन गुण मुख्य है (१) सम्यग्ज्ञान (२)सम्यग्दर्शन (३) सम्यक्-चारित्र और यह चेतना धर्म सदा जीवके पास रहता है निगोड ( महा कनिष्ठ ) अवस्थामें भी चेतनाधर्म जीवसे निराला नहीं हुवा बहा परभो चेतना हमेशा बनी रही इतना जरर हुवाकि यह चेतनाधर्म कायम होते हुवेभो जीव इसे जान-पट्टिचान सभा नहीं-भूल रहा. जैसेकि-किसी बालककी शाल्यास्थामें उसके माता-पिताने बालकके गलेमें चिन्तामणिरत्न (चिन्ताको चूरने-वाला-सब मनोरथको पूरनेवाला रत्न) बान्ध दिया और बालकमें समय आनेके पहीछेही वे मातापिता मरगये लडका बहा तो हुवा परन्तु अशुभ कर्म प्रगट होनेसे वह निर्धन-दारद्री हो गया और उस ज्ञान (बालक)को यह खबर

नहीं कि दरिद्रताका नाश करनेवाला चिन्तामणि उसीके पास है—उसीके गलेमें है. बातमें किसी सज्जन मनुष्यने उसको कहा कि हे भाई ! तेरे पास चिन्तामणि है. दरिद्री क्यों बन रहा है ? उस मणिमें राममें लाव, तेरा सब दारिद्र्य क्षण मात्रमें नष्ट हो जावेगा परन्तु उस युवकको उस बात पर विश्वास नहीं आया—उम सज्जन पुरुषका मरना नहीं माना, कारण कि उसके पूर्व अशुभ कर्मोंका जोर था अर्थात् अन्तराय कर्मका उदय प्रकृत पल्लवानथा, उसे दुरुप उठाना ( मरना ) पानीया, उससे चारचार चेताने परभी उस युवा ( लड़के ) को श्रद्धा न आई और दरिद्री बना रहा, इसी प्रकार जिस जीवको बहुत ससारका उदय है—ससारमें परिभ्रमण करना पानी है उसको सहस्रह द्वारा अनेक वरत समझाया जाने परभी, चेतनाधर्म पासही होते हुएभी, विश्वास नहीं होता चेतनाधर्म जानता नहीं—मानता नहीं अर्थात् निज धर्मका भूल रहा है ओरभी इसी बातको समझानेके वास्ते दूसरा दृष्टान्त दीया जाता है जैसे—किसी मनुष्यके घरके भोयरमें धन गडा हुआ है परन्तु घरके (वर्तमान) मालिकको इस बातका ज्ञान नहीं. किसी जानकार मनुष्यने उपहार बुद्धिसे, उस मालिकको कहाकि हे भाई ! तेरे घरमें बहुत दोग्न गठी हुई—जमानो हुई है. उस मनुष्यके अन्तराय कर्म कमजोर था दरिद्रावस्था मिटने वाली थी, इससे

सज्जनके रचनपर घरके मालिकको विश्वास आगया और प्रयत्न द्वारा उस प्रवाल-वेनाम द्रव्यको पाकर सुरी हुवा । इसी तरह सर्वज्ञ भाषित चेतनाधर्म इस जीवके पासही है । मद्धुट्टरा मयोग भीत्रने पर-मद्धुरुके मुहसे यह बात सुनकर उस भव्य-लघुरुमी जीवकी विश्वास आ जाता है और प्रयत्न द्वारा निज चेतना धर्म प्राप्त करके परम सुखी हो जाता है ।

गिप्य-हे भगवन् ' जीवकी निज वस्तु उसके पासही है तो फिर कौसी वस्तु प्राप्त करना बाकी रहा ? अथवा उसे यह जीव कैसे भूल गया है वा खो बैठा है ?

गुरु-हे भव्य ! यह जीव अनादि कालसे रागद्वेष बश हो कर अपने चेतना धर्मको भूला हुआ है और वह चेतनाधर्मभी परमस्तु के निमित्तसे नहींजैसा हो रहा है जैसे कि एक द्रव-जगत्त पाणीसे पूर्ण भरा है उस जलमें तीन मुख्य गुण है-निर्मलता-मधुरता-शीतलता परन्तु जब वह जलाशय सेवालसे छा गया-ढक गया, तब ये गुण कैसे के कैसे न रहे वे गुण लुप्तसे हो गये अब पहले जैसी शीतलता न रही, मधुरता न रही और निर्मलता तो त्रिलकुल ही अदृश्य हो गई । तैसेही जीवके चेतना धर्मको समझना औरभी यह समझा देना ठीक है कि सेवाल गहरके कुछ निमित्त पाकर जलसे ही पैदा होती है और उसी जलकी

